79

तैयार होना

बाइबल पाठ #33

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह (क्रमशः)।
  ड. मंगलवार: ''प्रश्नों का बड़ा दिन।'' (क्रमशः)।
    7. यरूशलेम के विनाश और द्वितीय आगमन पर प्रेरितों को संदेश (क्रमशः)।
      ग. द्वितीय आगमन पर शिक्षा (क्रमशः)।
        (2) उससे जुड़े दृष्टांत और शिक्षा।
          (क) दस कुंवारियां (मत्ती 25:1-13)।
          (ख) दस तोड़े (मत्ती 25:14-30)।
          (ग) भेड़ें और बकरियां (मत्ती 25:31-46)।
  च. बुधवार: तूफ़ान से पहले की शांति।
    1. यीशु: तैयारी कर रहा (मत्ती 26:1, 2; यूहन्ना 13:1)।
    2. महासभा: षड्यन्त्र रच रही (मत्ती 26:3-5; मरकुस 14:1, 2; लूका 22:1, 2)।
    3. यहूदा: विश्वासघात कर रहा (मत्ती 26:14-16; मरकुस 14:10, 11; लूका 22:3-6)।
  छ. गुरुवार: फसह के लिए तैयारी (मत्ती 26:17-19; मरकुस 14:12-16; लूका 22:7-13)।
  ज. शुक्रवार*: यीशु की मृत्यु का दिन।
    1. अन्तिम भोज।
      क. फसह मनाया गया (मत्ती 26:20; मरकुस 14:17, 18; लूका 22:14-18)।
      ख. झगड़े के लिए डांटा गया (लूका 22:24-30)।

परिचय

हम में से अधिकतर लोग तैयारी करने अर्थात समय से पहले तैयार होने के महत्व को मानते हैं। कोई काम छोटा हो या बड़ा, कोई उद्देश्य सराहनीय हो या संदेहास्पद,[1] तैयारी करना अच्छा रहता है। अधिकतर लोग ऐसोप की चींटी और टिड्डे की कहानी की शिक्षा से सहमत होंगे: ''कल की आवश्यकताओं के लिए आज तैयारी करना [समझदारी] है।''[2] तैयारी के बारे में बाइबल बहुत कुछ बताती है: नूह ने किश्ती तैयार की (इब्रानियों 11:7);

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने मसीह के लिए मार्ग तैयार किया (यशायाह 40:3; मलाकी 3:1; मत्ती 3:3); यीशु हमारे लिए जगह तैयार कर रहा है (यूहन्ना 14:1, 2; देखें मत्ती 25:34; इब्रानियों 11:16)।

हमारा यह अध्ययन अवस्था परिवर्तन का पाठ है, जो हमें मंगलवार अन्त से शुक्रवार के आरम्भ अर्थात उस दिन तक ले आता है, जब मसीह की मृत्यु हुई। पूरे अध्ययन का विषय तैयारी अर्थात तैयार होना रहेगा।

PAROUSIA[3] के लिए तैयार होना (मत्ती 25:1-46)

पिछले पाठ में हमने सुझाव दिया था कि मत्ती 24:36 में यीशु ने अपने द्वितीय आगमन तथा युग के अन्त के बारे में चेलों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देना आरम्भ किया था (24:3ख)। उसके उत्तर में ज़ोर दिया गया कि उसके वापस आने का समय कोई नहीं जान सकता (24:36-41) और इस कारण उसके अनुयायियों को हमेशा तैयार रहना चाहिए (25:42-51)। तैयार रहने पर दिया गया वह ज़ोर मत्ती 25 अध्याय तक जारी रहता है।

दस कुंवारियां (आयतें 1-13)

अध्याय का आरम्भ दस कुंवारियों के दृष्टांत से होता है।[4] युवतियां दूल्हे की प्रतीक्षा कर रही थीं (आयत 1)।[5] उसके पहुंचने पर जश्न मनाया जाना था, यह विवाह का समारोह था। स्वागत करने वालों के रूप में, स्त्रियों को दूल्हे के रास्ते में प्रकाश करने के लिए मशालें[6] पकड़कर खड़े रहना था।

दूल्हा समय पर नहीं पहुंचा। इस कारण मशालों का तेल खत्म होने लगा। पांच कुंवारियां, जिन्हें "समझदार" या बुद्धिमान कहा गया है, अपने साथ अतिरिक्त तेल लाई थीं (आयत 4)। बाकी पांच जिन्हें "मूर्ख"[7] कहा गया, अपने साथ अतिरिक्त तेल नहीं लाई थीं, जिस कारण वे तेल खरीदने के लिए बाज़ार चली गईं (आयतें 3, 10)। जब वे बाज़ार गई हुई थीं, तो दूल्हा आ गया और वहां उपस्थित सब लोग दूल्हे के साथ जश्न मनाने के लिए घर में चले गए। जब मूर्ख कुंवारियां वापस आईं तो उन्होंने देखा कि दरवाज़ा बन्द हो चुका है, क्योंकि उन्होंने पहले से तैयारी नहीं की थी, इसलिए उन्हें विवाह समारोह में भाग लेने का अवसर न मिला।[8]

हम चकित हो सकते हैं कि पांच "समझदार" युवतियों ने शेष पांच युवतियों को अपना तेल क्यों नहीं दिया। इसका उत्तर दृष्टांत की प्रासंगिकता में मिलता है: जब मसीह अर्थात दूल्हा (देखें मत्ती 9:15; यूहन्ना 3:29) आएगा, तो कोई किसी के साथ अपनी तैयारी नहीं बांटेगा। मैं आपके लिए तैयारी नहीं कर सकता और आप मेरे लिए तैयारी नहीं कर सकते। "सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा" (रोमियों 14:12)।

यीशु ने इस चुनौती के साथ दृष्टांत को समाप्त किया: "जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को" (मत्ती 25:13)।

तोड़े (आयतें 14-30)

दस कुंवारियों के दृष्टांत के बाद तोड़ों का दृष्टांत दिया गया (आयतें 14-30)। दस कुंवारियों के दृष्टांत में लोगों को मसीह के लौटने की *प्रतीक्षा* करते दिखाया गया है, जबकि तोड़ों का दृष्टांत यह स्पष्ट करता है कि प्रतीक्षा करते हुए हमें *काम करना* आवश्यक है।

तोड़ों का दृष्टांत मोहरों के दृष्टांत जैसा ही है, जो यरूशलेम के दौरे के अन्त के निकट कहा गया था (लूका 19:11-27), परन्तु दोनों में अलग-अलग बातों पर ज़ोर दिया गया है। मोहरों के दृष्टांत से यीशु के सुनने वालों को यह याद दिलाया गया कि राज्य की स्थापना तुरन्त नहीं होगी, जबकि तोड़ों के दृष्टांत में प्रभु के विश्वासयोग्य सेवक होने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है।

तोड़ों के दृष्टांत में, एक स्वामी ने तीन सेवकों को अपनी सम्पत्ति सौंपी: एक को उसने पांच तोड़े दिए, एक को दो तोड़े और अन्तिम सेवक को एक तोड़ा ही मिला। ''तोड़े'' का अर्थ हम ''गुण'' के रूप में निकालते हैं, परन्तु उस समय यह धन की इकाई अर्थात मोटी राशि होता था। पांच तोड़ों वाले और दो तोड़ों वाले व्यक्ति ने अपने स्वामी का धन और धन कमाने के लिए इस्तेमाल किया। एक तोड़े वाले आदमी ने इस भय से कि कहीं वह उससे भी हाथ न धो बैठे, तोड़ा लेकर भूमि में गाड़ दिया। जब मालिक लौटा, तो पहले दो सेवकों को पुरस्कार दिया गया, जबकि तीसरे को दण्ड दिया गया।

इसमें संदेश इस अतिरिक्त विचार के साथ तैयार रहने की आवश्यकता ही है। मसीह के लौटने के लिए तैयार होने का एकमात्र ढंग उसके काम में लगे रहना है। हमें उन दानों का इस्तेमाल उसकी महिमा के लिए करना आवश्यक है, जो उसने हमें दिए हैं।

भेड़ें और बकरियां (आयतें 31-46)

यीशु का उपदेश अपने वापस आने का चित्र द्वारा समझाने के साथ समाप्त हुआ। कुछ लोग यह सिखाते हैं कि वापस आकर मसीह एक सांसारिक अर्थात राजनैतिक राज्य स्थापित करेगा और फिर एक हज़ार वर्ष तक पृथ्वी पर राज करेगा। परन्तु यीशु ने संकेत दिया है कि उसके आने के तुरन्त बाद न्याय होगा (आयतें 31, 32)।[9]

न्याय में, प्रभु लोगों को यीशु के समय के चरवाहों की तरह भेड़ों और बकरियों को अलग करेगा। भेड़ों और बकरियों को इकट्ठे चरने दिया जाता था, परन्तु दिन के अन्त में उन्हें अलग कर दिया जाता था। चरवाहे के रूपक के कारण, कुछ लोग इसे ''भेड़ों और बकरियों का दृष्टांत'' कहते हैं। साथ ही इस बात को समझ लें कि यह ''केवल एक कहानी'' नहीं है। न्याय वास्तविक है, और यह अवश्य होगा (इब्रानियों 9:27; प्रेरितों 17:31)।

तोड़ों का दृष्टांत प्रभु की सेवा करने के महत्व को सिखाता है। इस पद में उदाहरणों द्वारा समझाया गया है कि हम किस प्रकार प्रभु की सेवा कर सकते हैं-दुखियों की सहायता करके: भूखे, बे-घर, और नंगे,[10] बीमार और कैदी की सहायता करके ज़ोर साथी चेलों की सहायता करने पर ही है (मत्ती 25:40),[11] पर इसकी प्रासंगिकता सब लोगों के लिए बनाई जा सकती है (देखें गलातियों 6:10)।

कुछ लोग यह ध्यान दिलाकर बड़े खुश होते हैं कि मत्ती 25 में न्याय का आधार यह नहीं होगा कि हम शिक्षा में कितने मज़बूत हैं, बल्कि यह कि हम कितने प्रेम करने वाले हैं। हमें इस पद को वचन की दूसरी बातों से अलग न करने में सावधान रहना चाहिए, जिनमें शिक्षा और जीवन में सही होने की अनिवार्यता दिखाई गई है (उदाहरण के लिए, तीतुस 2:1; याकूब 1:27ख)। कुछ लोगों के तर्कों का इस्तेमाल करते हुए, हम अव्यावहारिक निर्णय पर पहुंच सकते हैं कि न्याय का आधार यीशु में विश्वास नहीं, बल्कि यह बात है कि हमने अच्छे कर्म किए हैं या नहीं–क्योंकि मत्ती 25:31–46 में मसीह में विश्वास का उल्लेख नहीं है।

इसके साथ ही, ये आयतें इस बात पर भी ध्यान दिलाती हैं कि नैतिक तौर पर शुद्ध होना और शिक्षा में सही होना ही काफ़ी नहीं है। हमारा धर्म दूसरों की सहायता करके दिखाया जाना आवश्यक है (याकूब 1:27क)। ''क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी, जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता'' (1 यूहन्ना 4:20ख); ''इसलिए जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है'' (याकूब 4:17)।

मसीह के लौटने के लिए तैयार रहना कितना महत्वपूर्ण है? जो तैयार नहीं हैं, वे ''अनन्त दण्ड भोगेंगे'' जबकि तैयार लोग ''अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे'' (मत्ती 25:46)। कुछ लोग यह दावा करते हैं कि धर्मी लोग तो अनन्तकाल के आनन्द में जाएंगे, परन्तु दुष्ट लोगों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। लेकिन मत्ती 25:46 में बताया गया है कि नरक भी तब तक रहेगा जब तक स्वर्ग।[12] हमें प्रभु के लौटने के लिए तैयार रहना आवश्यक है!

दुख सहने के लिए तैयारी करें (मत्ती 26:1-5, 14-16; मरकुस 14:1, 2, 10, 11; लूका 22:1-6; यूहन्ना 13:1)

यीशु: भविष्यवाणी करता है (मत्ती 26:1, 2; यूहन्ना 13:1)

यरूशलेम के विनाश तथा द्वितीय आगमन पर मसीह का प्रवचन (मत्ती 24 और 25) दिन के लिए प्रेरितों के साथ आराम करने के बाद जैतून के पहाड़ की तराइयों में दिया गया था (मत्ती 24:3)। संदेश मंगलवार के अन्त के निकट आरम्भ हुआ होगा और सूर्यास्त तक जारी रहा होगा, जो यहूदी गणना के अनुसार अगला दिन था। इस गणना के अनुसार, इस प्रवचन के तुरन्त बाद यीशु के शब्द फसह से दो दिन पहले (मत्ती 26:2) अर्थात बुधवार को कहे गए थे। ये शब्द एक और स्मरण दिलाने के लिए थे कि थोड़े समय में उसकी मृत्यु हो जानी थी (मत्ती 26:1, 2; मत्ती 20:17–19 से तुलना करें)।

मसीह के उस संक्षिप्त वाक्य के अलावा, हमें और कहीं से पता नहीं चलता कि बुधवार का अधिकतर समय या गुरुवार का पहला भाग उसने कैसे बिताया।[13] यह तूफ़ान से पहले की शान्ति थी। यूहन्ना 13:1 शुक्रवार से पहले के घण्टों के दौरान प्रभु के मन की बातों को बताता है: ''फसह के पर्व से पहले, जब यीशु ने जान लिया कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से जो जगत में थे, जैसा प्रेम

वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा।'' बुधवार और गुरुवार के बीच, कोई संदेह नहीं कि यीशु चेलों को, जिनसे वह प्रेम रखता था, तैयारी करवाता रहा। निश्चय ही उसने अपने पिता के साथ भी बात की और सम्भवतया सिर पर आई परीक्षा के लिए आराम करने की भी कोशिश की।[14] वह कलवरी के लिए तैयारी कर रहा था।

महासभा: षड्यन्त्र रच रही थी (मत्ती 26:3-5; मरकुस 14:1, 2; लूका 22:1, 2)

मसीह ने तो आराम किया हो सकता है, पर उसके शत्रुओं ने नहीं। बुधवार के दिन (मरकुस 14:1), महासभा ने महायाजक कायफा के महल के आंगन में एक गुप्त बैठक[15] की (मत्ती 26:3)। कायफा ने पिछली सभा की प्रधानगी की थी, जिसमें यीशु को मार डालने का निर्णय लिया गया था (यूहन्ना 11:47-53; देखें आयत 49)। मंगलवार वाली ''शब्दों की जंग'' में यीशु को अपमानित करने के प्रयासों में असफल होने के बाद, सभा उसे मारने पर और भी उतारू हो गई। समस्या यह थी कि वे दिन के समय लोगों के सामने उसे पकड़ने से डरते थे (देखें लूका 22:2ख), और चोरी-छिपे वे उसे पकड़ नहीं सकते थे, क्योंकि उन्हें पता नहीं था कि वह रात को कहां ठहरा हुआ है। उन्होंने निर्णय लिया कि उन्हें उसे पकड़ने के लिए पर्व तक प्रतीक्षा करनी होगी।

यहूदा: पकड़वाने वाला
(मत्ती 26:14-16; मरकुस 14:10, 11; लूका 22:3-6)

महासभा की दुविधा एक तरह से दूर हो गई, जिसका उन्होंने अनुमान नहीं लगाया था: यीशु के प्रेरितों में से एक ने उन्हें समाधान दे दिया। ''तब यहूदा इस्करियोती जो बारह में से एक था, महायाजकों के पास गया, कि उसे उन के हाथ पकड़वा दे'' (मरकुस 14:10)। स्पष्टतया यहूदा शेष प्रेरितों को किसी कारण छोड़ आया था। किसी न किसी प्रकार उसने यह पता लगा लिया कि सभा की बैठक कहां चल रही है। वहां पहुंचकर उसने उनसे पूछा, ''यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं तो मुझे क्या दोगे?'' (मत्ती 26:15क)।

उसने ''महायाजकों और पहरुओं के सरदारों के साथ बातचीत की, कि उस को *किस प्रकार* उन के हाथ पकड़वाए'' (लूका 22:4)। यहूदा को पता था कि यीशु कब क्या करता है (देखें यूहन्ना 18:2), इसलिए वह उन्हें रात के समय उसके पास ले जा सका। और ''बिना उपद्रव के, उसे उन के हाथ पकड़वा'' दिया (लूका 22:6)। महासभा इन घटनाओं से प्रसन्न थी (मरकुस 14:11क; लूका 22:5; देखें NIV)। खुशी से, ''उन्होंने उसे तीस चांदी के सिक्के तौलकर दे दिए'' (मत्ती 26:15ख)।

यहूदा के दुष्कर्म से सदियों पहले की गई भविष्यवाणी पूरी हुई (जकर्याह 11:12)। बहुत से विद्वानों का विश्वास है कि चांदी के सिक्के शेकेल (या सेटर थे जो शेकेल के बराबर थे)। शेकेल चार दीनार के लगभग होता था। यदि ये अधिकारी सही हैं, तो ''चांदी के तीस सिक्के'' एक साधारण मज़दूर की चार महीने की कमाई हो सकते हैं।[16] यह ''किसी दास का लगभग मूल्य'' था।[17]

हो सकता है कि चांदी के तीस सिक्के केवल पेशगी हों, जिसके आधार पर यहूदा को प्रभु के पकड़वाए जाने के बाद धन मिलना था। मरकुस 14:11 के अनुसार, सभा ने ''उसको रुपये देना *स्वीकार किया।*'' लूका के वृत्तांत के अनुसार, उन्होंने ''उसे रुपये देने का वचन दिया'' और ''उसने मान लिया'' (लूका 22:5, 6)। यदि तीस सिक्के पेशगी ही थे, तो इस प्रेरित के ''उसी समय से उसे पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने'' की बात समझ में आती है (मत्ती 26:16)।[18]

यहूदा द्वारा यीशु को पकड़वाए जाने को ''इतिहास की एक पहेली'' कहा गया है। उस अंधेरे दिन से ही, लोग इसके *क्यों* का उत्तर ढूंढ़ रहे हैं। पवित्र शास्त्र में मुख्य प्रेरणा यहूदा का लालच बताया गया है (मत्ती 26:14, 15; देखें यूहन्ना 12:6)। कुछ दिन पहले यीशु की डांट से यह प्रेरित अभी भी परेशान होगा (यूहन्ना 12:4-8)। वह यीशु द्वारा अपनी प्रसिद्धि का लाभ न उठा पाने से भी निराश होगा।[19] एच. आई. हेस्टर ने लिखा है:

> यरूशलेम में यीशु के राज्य के परिणाम के बारे में उसे पहले ही शंकाएं थीं। कोई संदेह नहीं कि उसे लगा कि जहां तक भौतिक लाभों की बात थी उसमें यह खत्म ही हो जाना था। उसने महसूस किया कि यीशु के साथ रहकर उसे अधिक लाभ नहीं होने वाला। ... क्योंकि यह संस्थान खत्म होने वाला था इसलिए उसे लगा होगा कि जो मिलता है वह पाकर वह फायदे में रहेगा।[20]

कुछ लोगों ने यहूदा के उद्देश्यों को निष्कलंक बनाने की कोशिश की है,[21] परन्तु यदि उसके उद्देश्य पवित्र थे तो शैतान उसके जीवन पर नियन्त्रण न कर पाता। कहा गया है कि ''शैतान यहूदा में समाया'' (लूका 22:3; यूहन्ना 13:27 भी देखें)।[22] इन आयतों का अर्थ यह नहीं है कि शैतान यहूदा में उसकी इच्छा के विरुद्ध समाया (देखें याकूब 4:7)। बल्कि, ''शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था, कि उसे पकड़वाए'' (यूहन्ना 13:2)।[23] शैतान ने यहूदा के मन में यह विचार वैसे ही डाला, जैसे वह हमारे मनों में डालता है: हमारे आस-पास की घटनाओं में छल-कपट करके। शैतान यहूदा को प्रभावित कैसे कर पाया? क्योंकि इस प्रेरित ने अपने आप को धोखा देने वाले के हाथों में सौंप दिया था।

सारे प्रबन्ध हो जाने के बाद, यहूदा यीशु तथा अन्य प्रेरितों के पास लौट गया।[24] बाहर से वह पहले जैसा ही लग रहा था;[25] परन्तु अन्दर से उसके मन में एक ही बात थी: ''सभा के साथ किया गया अनुबन्ध मैं कैसे पूरा कर सकता हूं?'' ''वह उसी समय से उसे पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने लगा'' (मत्ती 26:16)।

फसह के लिए तैयार होना (मत्ती 26:17-20; मरकुस 14:12-18क; लूका 22:7-18, 24-30)

बुधवार रात (समय की हमारी गणना के अनुसार), यीशु ''पृथ्वी पर अन्तिम बार लेटा। गुरुवार सुबह वह फिर कभी न सोने के लिए उठा।'' गुरुवार अर्थात फसह से पहला दिन जिसे ''अखमीरी रोटी के पर्व के पहिले दिन'' के रूप में जाना जाता था (मत्ती 26:17;

मरकुस 14:12; लूका 22:7), क्योंकि यह वह दिन था, जिसमें विशेष पर्व के लिए तैयारी की जाती थी।[26] इस दिन, ''फसह का मेमना बलि करना आवश्यक था'' (लूका 22:7; मरकुस 14:12) पर्व को ध्यान में रखकर, जिसे सूर्यास्त के बाद खाना था (शुक्रवार को, यहूदी गणना के अनुसार)।

फसह की तैयारी की गई (मत्ती 26:17-19;
मरकुस 14:12-16; लूका 22:7-13)

चेले मसीह के पास आकर पूछने लगे कि ''तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिए फसह खाने की तैयारी करें?'' (मत्ती 26:17)। यीशु ने असामान्य निर्देश देकर पतरस और यूहन्ना को तैयारी करने के लिए भेजा (लूका 22:8; देखें मरकुस 14:13): ''नगर में जाओ और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा'' (मरकुस 14:13क)। क्योंकि पानी का घड़ा आमतौर पर आदमी नहीं, औरतें ही उठाती थीं, इसलिए आदमी का पता लगाना आसान होना था। मसीह ने दोनों चेलों को उस व्यक्ति के पीछे-पीछे जाने के लिए कहा और बताया कि ''वह जिस घर में जाए, उस घर के स्वामी से कहना; गुरु कहता है कि मेरी पाहुनशाला, जिसमें मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊं कहां है?'' (मरकुस 14:13ख, 14; देखें मत्ती 26:18)।

सुझाव दिया गया है कि मसीह ने यह जटिल ढंग अपनाया, ताकि यहूदा शाम तक महासभा को यह न बता पाए कि वह कहां है। वरना, बहुत सी मुख्य घटनाएं जैसे प्रभु भोज की स्थापना, ''महान अन्तिम उपदेश'' (यूहन्ना 14-16), प्रभु की प्रार्थना (यूहन्ना 17) और गतसमनी के बाग में होने वाली घटना न होती। क्या यीशु ने घटनाओं की शृंखला का प्रबन्ध पहले से कर लिया था (घड़ा लेकर जाने वाले आदमी के साथ), या उसने ईश्वरीय पूर्वज्ञान का इस्तेमाल किया? हमें नहीं बताया गया है।

यीशु ने पतरस और यूहन्ना को बताया कि घर का स्वामी उन्हें ''बड़ी अटारी दिखा देगा'' (मरकुस 14:15ख)। बाइबल से बाहर की पम्परा के अनुसार यह ''ऊपरी कमरा'' था, जिसमें बाद में पिन्तेकुस्त से पहले प्रेरित ठहरे थे (प्रेरितों 1:12, 13)। कुछ लोगों का अनुमान है कि यह घर यूहन्ना मरकुस की माता का था (प्रेरितों 12:12)। यह घर स्पष्टतया प्रभु के किसी चेले का था (देखें मत्ती 26:18); इससे आगे वचन में कोई जानकारी नहीं मिलती।

दोनों प्रेरितों को यह प्रतिज्ञा दी गई थी कि वह कमरा ''तैयार किया हुआ और सजा सजाया'' मिलेगा (मरकुस 14:15क)। कमरा साफ़ हुआ मिलना था, जिसमें मेज़ और कालीन अपनी जगह पर, दावत खाने के लिए आने वालों के पैर धोने के लिए सब कुछ तैयार मिलना था (देखें यूहन्ना 13:3-5)। शायद खमीर की खोज भी पहले से ही पूरी हो गई होनी थी (देखें निर्गमन 12:15)।[27]

पतरस और यूहन्ना ने ''जैसा उसने उन से कहा था, वैसा ही पाया; और फसह तैयार किया'' (मरकुस 14:16)। यदि मेमना पहले से न रखा होता, अर्थात खरीदना पड़ता[28] जो बेदाग हो, तो उन्हें काफ़ी काम करना पड़ता (निर्गमन 12:5)। मेमना रीति के अनुसार काटने के लिए मन्दिर में ले जाया जाना था। वहां चेले इसे मारते, एक याजक वेदी पर

डालने के लिए इसका लहू लेता। वेदी पर जलाने के लिए कुछ भाग उतारने के बाद (देखें लैव्यव्यवस्था 3:3–5), उसकी देह मालिकों को सौंप दी जाती। फिर मेमने को भूना जाना था (निर्गमन 12:8)। उन्हें यह ध्यान रखना था कि तैयारी के दौरान या फसह के दौरान इसकी कोई हड्डी न टूटे (निर्गमन 12:46; गिनती 9:12)।[29] निम्न वस्तुओं के साथ और वस्तुएं भी फसह के भोजन के लिए सम्भालनी और तैयार करनी आवश्यक थीं:[30]

- अखमीरी रोटी (निर्गमन 12:8, 18–20; 13:6, 7; 34:18, 25; लैव्यव्यवस्था 23:6; गिनती 9:11; 28:17), ''दुख की रोटी'' (व्यवस्थाविवरण 16:3, 8)।
- दाख का रस (देखें मत्ती 26:27, 29)। यीशु के समय में इस समारोह में दाख के रस के चार कटोरे इस्तेमाल किए जाते थे,[31] जो पारम्परिक रूप से निर्गमन 6:6, 7 की चार प्रतिज्ञाओं को दर्शाते थे।
- कड़वा सागपात (निर्गमन 12:8; गिनती 9:11) जो मिस्र की दासता की कड़वाहट को दर्शाता था।
- सिरके या दाख के रस में भिगोए पिसे हुए फल और मेवों से बनी एक मोटी कचौड़ी,[32] जो उस मिट्टी को दर्शाती थी, जिससे इस्राएली लोग मिस्र में ईंटें बनाया करते थे।[33]

फसह मनाया गया (मत्ती 26:20; मरकुस 14:17, 18क; लूका 22:14–18)

सूर्यास्त से थोड़ा पहले, यीशु तैयार की हुई जगह पर ''बारहों के साथ आया'' (मरकुस 14:17)। रब्बियों की शिक्षा के अनुसार, एक मेमना कम से कम दस और अधिक से अधिक बीस लोगों द्वारा खाया जाना आवश्यक था।[34] अटारी में तेरह लोगों ने भुना हुआ मेमना बांटकर खाना था, जिसे छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा गया था, ताकि हाथ से खाया जा सके।[35]

यीशु मेज़ पर झुका, जिस पर फसह का भोज रखा हुआ था (मत्ती 26:20; मरकुस 14:18क; लूका 22:14)।[36] यूहन्ना उसकी दाईं ओर था (यूहन्ना 13:23), शायद यहूदा बाईं ओर था,[37] और बाकी चेले मेज़ के इर्द-गिर्द दोनों ओर बैठे हुए थे। आंखों से प्रेम झलकाते हुए (देखें यूहन्ना 13:1, 34), उसने कहा, ''मुझे बड़ी लालसा थी, कि दुख-भोगने से पहिले यह फसह[38] तुम्हारे साथ खाऊं। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो, तब तक मैं उसे कभी न खाऊंगा'' (लूका 22:15, 16)।

मसीह के यह कहने का क्या अर्थ था कि फसह ''परमेश्वर के राज्य में पूरा'' होना आवश्यक था, ? हम आम तौर पर फसह को यीशु के बलिदान का प्रतिरूप मानते हैं और ऐसा था भी (1 कुरिन्थियों 5:7; देखें यूहन्ना 1:29, 36; 1 पतरस 1:18, 19; इब्रानियों 9:14; प्रकाशितवाक्य 5:6, 12)। परन्तु प्रभु ने साथ ही यह भी कहा कि फसह ''राज्य में पूरा'' होना था। फसह के लिए यहूदी विचार न केवल अतीत में हुए छुटकारे को याद

दिलाना, बल्कि भविष्य के छुटकारे का आश्वासन भी था। मसीह ने यह संकेत देते हुए कि वह छुटकारा मसीहा के राज्य में आएगा, उसी विचार पर बनाया।

राज्य कलीसिया को ही कहा गया है (मत्ती 16:18, 19), जो मसीह के लहू के द्वारा उद्धार पाए हुए लोगों का एक समूह है (इफिसियों 1:22, 23; 2:16; 5:23, 25)। जिस प्रकार यहूदियों का फसह मिसर से इस्राएल के छुटकारे को याद रखने के लिए मनाया जाता था, वैसे ही हमारे फसह के मेमने के बलिदान के द्वारा, परमेश्वर ने ''हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' (कुलुस्सियों 1:13) है। फसह को ''परमेश्वर के राज्य'' अर्थात कलीसिया ''में ... अन्तिम परिपूर्णता''[39] मिल गई है।

यीशु ने कहा कि उसने यह पर्व दोबारा राज्य में पूरा होने पर ही खाना था। ''खाना'' को ''में भाग लेना'' के अर्थ में सांकेतिक रूप में इस्तेमाल किया गया है। यहूदी विचार के अनुसार मसीहा और उसके राज्य का आना बड़े भोज के साथ मनाया जाना था (यशायाह 25:6–8; देखें लूका 13:29; 22:30)। राज्य सांसारिक नहीं है (यूहन्ना 18:36), इसलिए भोज भी सांसारिक नहीं है। मसीहा के पर्व की आशाओं का अन्तिम पूरा होना स्वर्ग में ही होगा (प्रकाशितवाक्य 19:7–9); परन्तु इस जीवन में भी, हम में से जो लोग राज्य/कलीसिया में हैं, वे आत्मिक पर्व का आनन्द लेते हैं। मसीह आत्मिक आशिषों के भोज में हमारे साथ अदृश्य रूप से भाग लेता है (इफिसियों 1:3; प्रकाशितवाक्य 3:20; मत्ती 18:20)।

पर्व के आरम्भ होने के निकट, यीशु ने दाखरस का एक कटोरा लिया, धन्यवाद दिया और बारहों से कहा, ''इस को लो और आपस में बांट लो'' (लूका 22:17)। यह कटोरा प्रभु भोज की स्थापना में इस्तेमाल होने वाला कटोरा नहीं था; वह तो भोज के अन्त में आना था (देखें लूका 22:20)। यह फसह के समारोह में इस्तेमाल होने वाले कई कटोरों में से पहला था। मसीह ने फिर वही बात दोहराई, जो पहले कही थी: ''जब तक परमेश्वर का राज्य न आएगा तब तक मैं दाख रस अब से कभी न पीऊंगा'' (लूका 22:18)। राज्य/कलीसिया मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त पर आ गया। जैसा कि पहले कहा गया है, प्रभु के शब्दों के उस आत्मिक पर्व में उसके भाग लेने की सामान्य प्रासंगिकता है, जिसका हम आनन्द लेते हैं। परन्तु जैसा कि हम अगले पाठ में देखेंगे, प्रभु भोज में हमारे भाग लेने के सम्बन्ध में यीशु के शब्दों की विशेष प्रासंगिकता है।

फसह में बाधा पड़ी (लूका 22:24–30)

पर्व का आनन्द शान्ति और प्रेम के वातावरण में हुआ लेकिन, शीघ्र ही यह चेलों के एक पुराने झगड़े के फिर से शुरू होने के कारण कि सबसे बड़ा कौन है, इसके रंग में भंग पड़ गया। (आयत 24; देखें मरकुस 9:34; लूका 9:46)।[40] यह बहस शायद राज्य के उल्लेख के कारण उठी थी। हो सकता है कि यह बैठने के प्रबन्ध के कारण बढ़ी हो। जो भी कारण हो, इस झगड़े के बचकानेपन, स्वार्थ और असंगत होने के कारण मसीह का मन दुखी हुआ होगा। फिर, बड़ी ही सहजता से, उसने अपने अनुयायियों को याद दिलाया कि उसके राज्य में बड़ा रुतबा सेवा के आधार पर मिलेगा, न कि पदवी के आधार पर (लूका

22:25-27; देखें मत्ती 18:1-5; 20:25-28; 23:10-12)।

उसने उन्हें आश्वस्त किया कि उसके साथ उनकी निष्ठा भुलाई नहीं जाएगी। उन्हें उसकी परेशानियों में उसके साथ रहने का प्रतिफल अवश्य मिलेगा (लूका 22:28)। वे उसके राज्य/कलीसिया का महत्वपूर्ण भाग होंगे (आयत 29; देखें 1 कुरिन्थियों 12:28) और उसके साथ निकट और व्यक्तिगत सम्बन्ध का आनन्द लेते रहेंगे (लूका 22:30क)। वे उसके साथ राज भी करेंगे (आयत 30ख)।[41]

सारांश

यीशु ने अपने चेलों को सेवा करना *बताया* ही नहीं, बल्कि उनके पांवों को धोकर उन्हें दीनता से सेवा करना भी *दिखाया* (यूहन्ना 13:2-20)। अगले पाठ में हम उस घटना का और प्रभु-भोज से जुड़े दूसरे विषयों का अध्ययन करेंगे। एक मुख्य बात प्रभु भोज की स्थापना होगी।

अन्त में, आइए तैयारी करने के विषय पर लौटते हैं। प्रभु एक दिन वापस आएगा; यह दिन आज भी *हो सकता* है (मत्ती 24:36, 42-44)। क्या आप तैयार हैं?

टिप्पणियां

[1]हम देखेंगे कि महासभा ने यीशु को मारने की ''तैयारी की'' थी। [2]*बार्टलैट'स फैमिलियर कुटेशन्ज, एक्सपेंडड मल्टीमीडिया एडीशन* (टाइम वार्नर इलैक्ट्रॉनिक पब्लिशिंग, 1995) में उद्धृत। ऐसोप एक यूनानी लोक नायक था, जो छठी शताब्दी में हुआ माना जाता है। उसके साथ पशुओं की कई कहानियां जुड़ी हुई हैं। [3]जैसा कि पहले देखा गया था, *parousia* यीशु के द्वितीय आगमन के लिए एक यूनानी तकनीकी शब्द है। [4]इस दृष्टांत में ''कुंवारियों'' शब्द युवा, अविवाहित दासियों के लिए होगा। उस समय, एक युवा, अविवाहित यहूदी स्त्री मूलत: एक कुंवारी होने का पर्याय था। [5]कुंवारियां दूल्हे के आने की प्रतीक्षा दुल्हन के घर में कर रही होंगी, पर यह अधिक सम्भावना है कि वे दूल्हे के घर में दुल्हन के साथ वापस आने की प्रतीक्षा कर रही थीं। [6]ये मिट्टी के बने छोटे दीये हो सकते हैं, जो उस समय सामान्य तौर पर इस्तेमाल होते थे (देखें मत्ती 5:15)। परन्तु कई लोगों का मानना है कि यीशु के दिमाग में मशालें थीं, जो बारात के आगे-आगे रोशनी करने के लिए अधिक उपयुक्त होंगी। (''मशाल'' एक बड़ी लकड़ी के एक सिरे पर बंधे कपड़े पर आग लगाकर बनाई जाती थी)। [7]एक प्रचारक ने कहा, ''पांच बुद्धिमान थीं, और पांच नहीं।'' [8]मत्ती 25:12 में ''जानता'' शब्द का इस्तेमाल (बाइबल में अन्य जगहों की तरह) ''पक्ष में जानना'' के अर्थ में है। स्वामी को मालूम था कि वे *कौन* थे पर उसने उन्हें समारोह में भाग लेने के उनके अधिकार को नहीं माना (मत्ती 7:23 से तुलना करें)। [9]कुछ लोग यह सिखाते हैं कि न्याय कई होंगे और मत्ती 25:31-46 को अन्य न्यायों की तुलना में ''देशों का न्याय'' बताते हैं, परन्तु बाइबल केवल न्याय के एक ही दिन की शिक्षा देती है (देखें इब्रानियों 9:27)। [10]इस आयत में ''नंगा'' शब्द का इस्तेमाल अन्य आयतों की तरह, पूरे वस्त्र न पहने होने के अर्थ में किया गया है।

[11]जो कैदी थे, उन्हें अपने विश्वास के कारण गिरफ़्तार किया गया था। आप यहां रुककर बता सकते हैं कि जब आप किसी भाई की सहायता या उससे दुर्व्यवहार करते हैं तो आप यीशु की सहायता या उसके साथ दुर्व्यवहार कर रहे होते हैं (मत्ती 25:40, 45; प्रेरितों 9:4 भी देखें)। [12]मत्ती 25:46 में इसी शब्द (''अनन्त'' या ''अनादि'' के लिए यूनानी शब्द) का इस्तेमाल ''दण्ड'' और ''जीवन'' के लिए किया गया है। यदि दण्ड

अनन्तकालिक नहीं है, तो जीवन भी नहीं है। इसी प्रकार, यदि जीवन अनन्त है, तो दण्ड भी है। [13]जैसा कि पहले देखा गया था, सुसमाचार के कुछ समन्वयों में घटनाओं को हमने मंगलवार में बुधवार सुबह में डाल दिया है। कुछ बुधवार के बैतनिय्याह के भोज (मरियम द्वारा अभिषेक करने वाला) को भी डालते हैं, यद्यपि यूहन्ना ने संकेत दिया कि यह कई दिन पहले हुआ था (यूहन्ना 12:1, 2, 12)। [14]बाद में उसने मंगलवार सुबह से अपनी मृत्यु तक, लगभग 36 घण्टे सोना था। [15]यीशु का पक्ष लेने वाले (निकुदेमुस और अरमितियाह के यूसुफ जैसे) सभा के सदस्यों को इस बैठक में नहीं बुलाया गया होगा। [16]आप अपने छात्रों को समझने में सहायता के लिए कि यहूदा को पेशगी में कितना धन मिला, अपने देश के पैसों में एक साधारण मज़दूर के चार महीनों के वेतन की गणना कर सकते हैं। [17]एफ़. लेगर्ड स्मिथ, *द नैरेटड बाइबल इन क्रोनोलॉजिकल ऑर्डर* (यूजीन, ओरिगन: हार्वेस्ट हाउस पब्लिशर्स, 1984), 1453. देखें निर्गमन 21:32. यह बैल के सींग मारने से मारे गए सेवक का मोल था। [18]परन्तु यह ध्यान रखा जाए कि यहूदा को केवल चांदी के तीस सिक्के ही मिले थे। [19]यह भी सुझाव दिया गया है कि यहूदा को लगा कि वह अधिकारियों को यीशु के ठिकाने के बारे में बताकर देश सेवा कर रहा है (देखें यूहन्ना 11:57)। यह सम्भव *है* कि यहूदा ने अपने आप को बताया हो कि अपने विवेक के दोष को हल्का करने के लिए, परन्तु उसका प्रश्न "कितना ?" देश सेवा करने वाला नहीं लगता। [20]एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 195.

[21]उदाहरण के लिए, कुछ लोगों ने कहा है कि यहूदा केवल यीशु को आगे बढ़कर अपना (सांसारिक, राजनैतिक) राज्य स्थापित करने को विवश करने के लिए धक्का देना चाहता था। यह सच है कि यूहदा ने अपने कामों के परिणामों के बारे में विचार नहीं किया (मत्ती 27:3-5) परन्तु बाइबल उसके द्वारा किए जाने वाले धोखे को कहीं भी भला उद्देश्य नहीं कहती। पृष्ठ 57 पर "कभी न भुलाई जाने वाली रात" पाठ में इस पर और टिप्पणियां देखें। [22]पहले यीशु ने उसे "शैतान" कहा था (यूहन्ना 6:70)। [23]उस समय के एक और उदाहरण के लिए जब शैतान ने किसी व्यक्ति के मन में "डालकर" उससे झूठ बुलवाया, देखें प्रेरितों 5:3, 4. [24]जैसा कि हम देखेंगे, यहूदा फसह के पर्व के लिए यीशु और अन्य प्रेरितों के साथ ऊपरी कमरे में गया। [25]यहूदा के हाव-भाव का न बदलना अगली घटनाओं में मिलता है। यीशु जानता था कि यहूदा ने क्या किया था, पर दूसरे चेलों को कोई संदेह नहीं था। [26]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 644. [27]यह भी हो सकता है कि फसह के पर्व का सामान घर के मालिक द्वारा पहले से ही खरीद लिया गया हो। [28]यह सम्भव है कि मेमना तीन दिन पहले लेकर रख लिया गया हो, जैसा कि *मिशनाह* में बताया गया था (पेसाहिम 9.5)। [29]यह विवरण इस तथ्य से जुड़ा है कि क्रूस पर यीशु की कोई हड्डी नहीं टूटी (यूहन्ना 19:31-36)। [30]यीशु के समय में फसह के बारे में जानकारी इसके बारे में पुराने और नये नियम के हवालों से, उस समय से रखी गई यहूदी शिक्षा से, और जोसेफस के लेखों से ली गई है। पर्व में इस्तेमाल होने वाली इन चीज़ों का वर्णन *मिशनाह* में है (पेसाहिम 10.1, 3-5)।

[31]एल्फ्रेड एडरशेम, *द लाइफ़ एण्ड टाइम्ज़ ऑफ़ जीज़स द मसायाह,* न्यू अपडेटेड वर्जन (पीबॉडी, मैसाचुएट्स, हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1993), 809, 817. अन्य लेखक इसे तीन या पांच कटोरे बताते हैं। [32]रोटी को चूरा करके इसे कचौड़ी में डालते और फिर मुंह में लपक लेते। यूहन्ना 13:26 में यह भोजन हो भी सकता है और नहीं भी। [33]एडरशेम, 809, n.19. [34]मैरविन आर. विल्सन, "पासओवर," *इन्टरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* सामान्य संस्करण जेम्स ऑर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन पब्लिशिंग कं., 1939), 3:677. यह शिक्षा बेबिलोनियन तालमुड में दी गई है (पेसाहिम 64बी)। [35]भोजन के दौरान खाने के बर्तनों (चाकू, कांटों या चमचों) का इस्तेमाल नहीं हुआ। [36]लियोनार्डो डा विंसी की प्रसिद्ध *द लास्ट सप्पर* (1495-98) वाली पेंटिंग उसके समय के इटली में खाने के बैठने के ढंग को दिखाती है, मसीह के समय के पलिश्तीनी ढंग को नहीं। [37]यीशु ने अपने साथ झुके हुए के साथ ही थाली में हाथ डालते हुए निवाला लिया होगा (मत्ती 26:23; यूहन्ना 13:26; "कभी न भुलाई जाने वाली रात" पाठ में चर्चा देखें)। [38]इस तथ्य के बावजूद कि यीशु ने संकेत दिया कि उसने चेलों के साथ फसह खाया था (मत्ती 26:18; मरकुस 14:14; लूका 22:11 भी देखें) कुछ लोग ज़ोर देते हैं कि यह भोज फसह का पर्व नहीं, बल्कि रात पहले खाया

गया भोजन था। इसके समर्थन में इस्तेमाल की जाने वाली एक आयत यूहन्ना 13:1 है, जो उनके कहने के अनुसार भोज के समय के बारे में है। परन्तु सभी आयतों पर विचार करने के बाद, यूहन्ना 13:1 फसह से तुरन्त पहले की लगती है, जिसमें आयत 2 में स्वयं फसह की बात कही गई है। [39]रिचर्ड रोजर्स, *द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट एण्ड हिज़ टीचिंग* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसेट इन्टरनैशनल बाइबल इंस्टीट्यूट एक्टसटर्नल स्टडीज़ डिपार्टमैंट, 1995), 84. [40]लूका ने इस झगड़े को बाद में शाम के समय का लिखा है। मैंने इसे पांव धोने की स्वाभाविक घटना तक ले जाने के रूप में यहां रखा है जिससे हमारा अगला पाठ आरम्भ होता है। प्रभु भोज के कालक्रम की कुछ चुनौतियों पर हम उस पाठ में (विशेषकर टिप्पणियों में चर्चा करेंगे)।

[41]यीशु ने उनसे प्रतिज्ञा की थी कि वे इस्राएल का न्याय करने के लिए बारह सिंहासनों पर बैठेंगे (मत्ती 19:28)।